ca | Foundation

LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

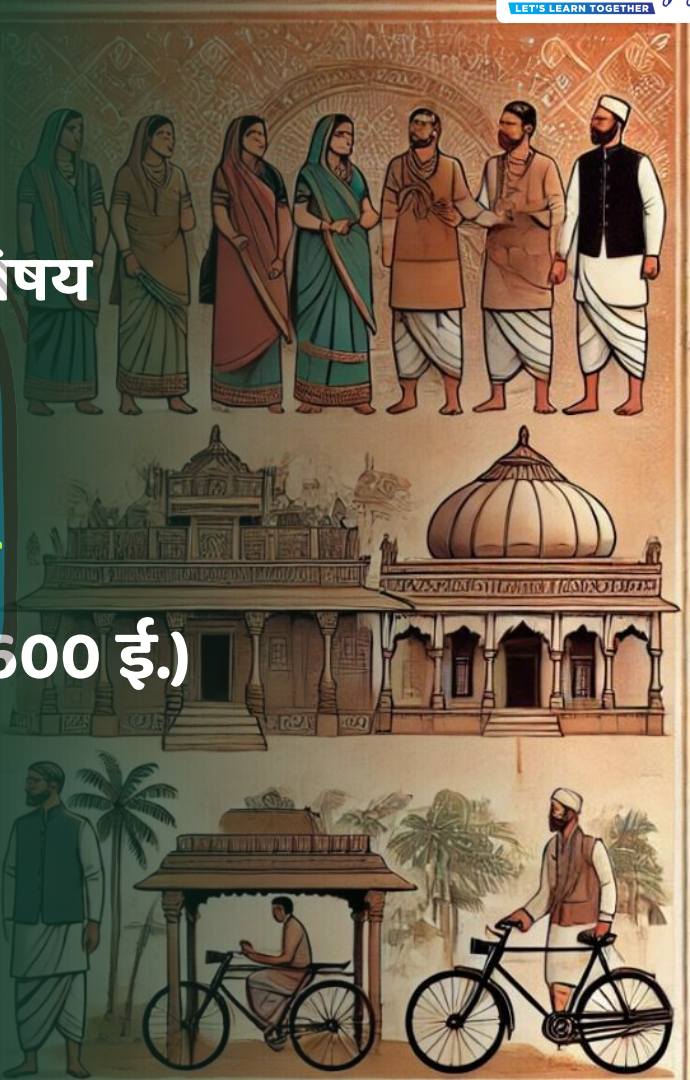
अध्याय - 3

बंधुत्व, जाति तथा वर्ग

आरंभिक समाज (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 4

प्रीतेश जोशी



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



जाति और सामाजिक गतिशीलता

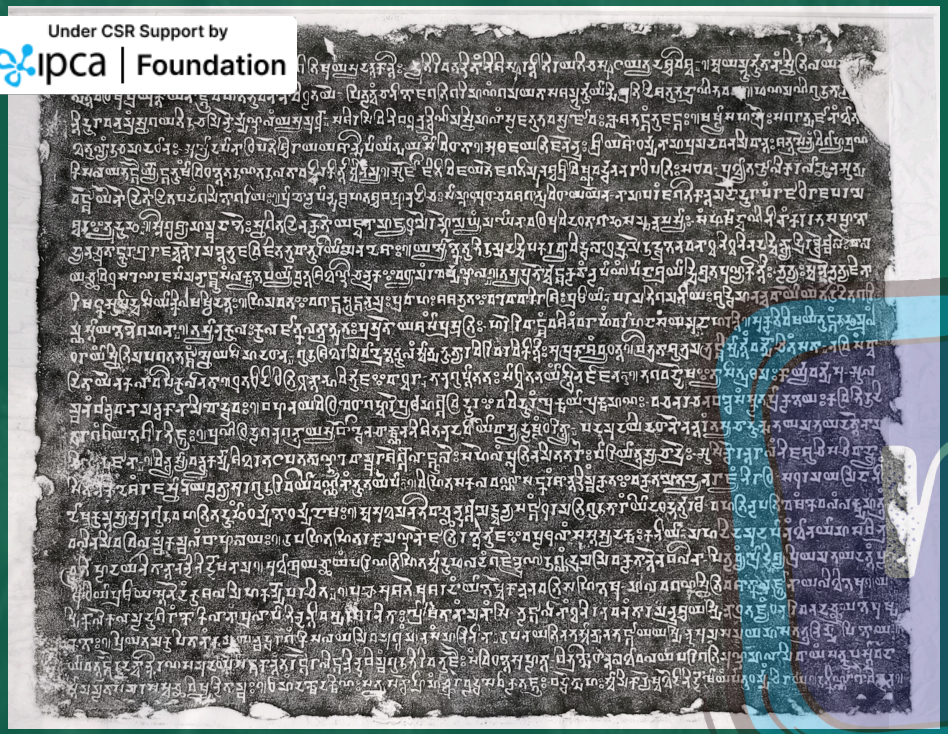
- ये जटिलताएँ समाज के वर्गीकरण के लिए शास्त्रों में प्रयुक्त शब्द जाति से भी स्पष्ट होती हैं।
- ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी।
- किंतु वर्ण जहाँ मात्र 4 थे वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी।
- जहाँ कहीं भी ब्राह्मणीय व्यवस्था का नए समुदायों से आमना-सामना हुआ –

  उदाहरणत: जंगल में रहने वाले निषाद या फिर व्यावसायिक वर्ग जैसे सुवर्णकार, जिन्हें चार वर्णों वाली व्यवस्था में समाहित करना संभव नहीं था, उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया।
- वे जातियाँ जो एक ही जीविका अथवा व्यवसाय से जुड़ी थीं उन्हें कभी-कभी श्रेणियों में भी संगठित किया जाता था।



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- हालाँकि इन समुदायों के इतिहास का लेखा-जोखा हमें कम ही प्राप्त होता है, किंतु कुछ अपवाद हैं जैसे कि मंदसौर (मध्य प्रदेश) से मिला अभिलेख (लगभग 500 ई.)।
- इसमें रेशम के बुनकरों की एक श्रेणी का वर्णन मिलता है जो मूलत: लाट (गुजरात) प्रदेश के निवासी थे और वहाँ से मंदसौर चले गए थे, जिसे उस समय दशपुर के नाम से जाना जाता था।

यह कठिन यात्रा उन्होंने अपने बच्चों और बांधवों के साथ संपन्न की। उन्होंने वहाँ के राजा की महानता के बारे में सुना था अत: वे उसके राज्य में बसना चाहते थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यह अभिलेख जटिल सामजिक प्रक्रियाओं की झलक देता है तथा श्रेणियों के स्वरूप के विषय में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
- हालांकि श्रेणी की सदस्यता शिल्प में विशेषता पर निर्भर थी जबकि कुछ सदस्य अन्य जीविका भी अपना लेते हैं।
- इस अभिलेख से यह भी ज्ञात होता है कि सदस्य एक व्यवसाय के अतिरिक्त और चीजों में भी सहभागी होते हैं।
- सामूहिक रूप से उन्होंने शिल्पकार्य से अर्जित धान को सूर्य देवता के सम्मान में मंदिर बनवाने पर खर्च किया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

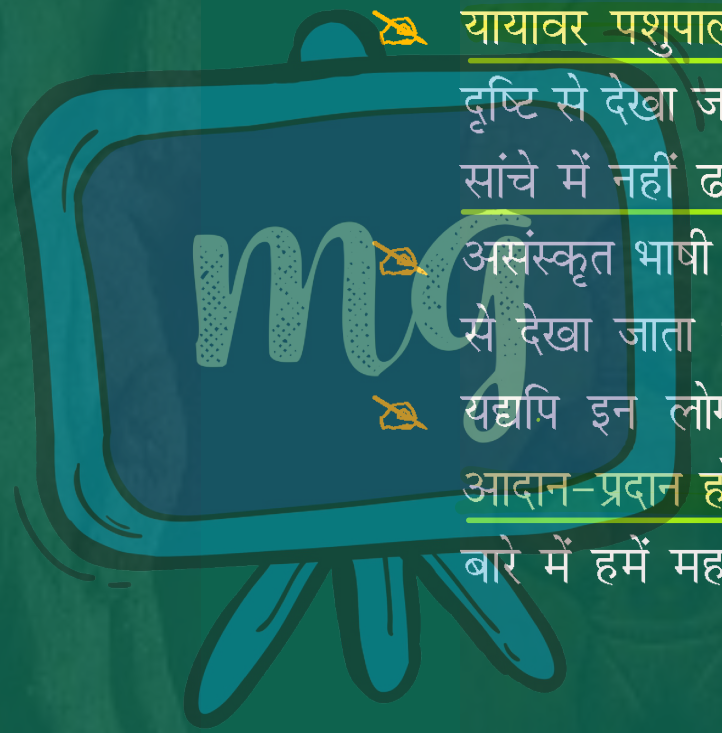


चार वर्णों से परे : एकीकरण

- उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की वजह से यहां हमेशा से ऐसे समुदाय रहे हैं जिन पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
- संस्कृत साहित्य में जब ऐसे समुदायों का उल्लेख होता है तो उन्हें विचित्र, असभ्य और पशुवत चित्रित किया जाता है।
- ऐसे कुछ उदाहरण वन प्रांतर में बसने वाले लोगों के हैं जिनके लिए शिकार और कंद मूल संग्रह करना जीवन निर्वाह का महत्वपूर्ण साधन था।
- निषाद वर्ग जिसका एकलव्य माना जाता था इसी का उदाहरण है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यायावर पशुपालकों के समुदाय को भी शंका की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उन्हें कृषि कर्मियों के सांचे में नहीं ढाला जा सकता था।
- असंस्कृत भाषी लोगों को मलेच्छ कहकर हेय-दृष्टि से देखा जाता था।
- यद्यपि इन लोगों के बीच विचारों और मतों का आदान-प्रदान होता था। उनके संबंधों के स्वरूप के बारे में हमें महाभारत की कथा से ज्ञात होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बाघ सदृश्य पति



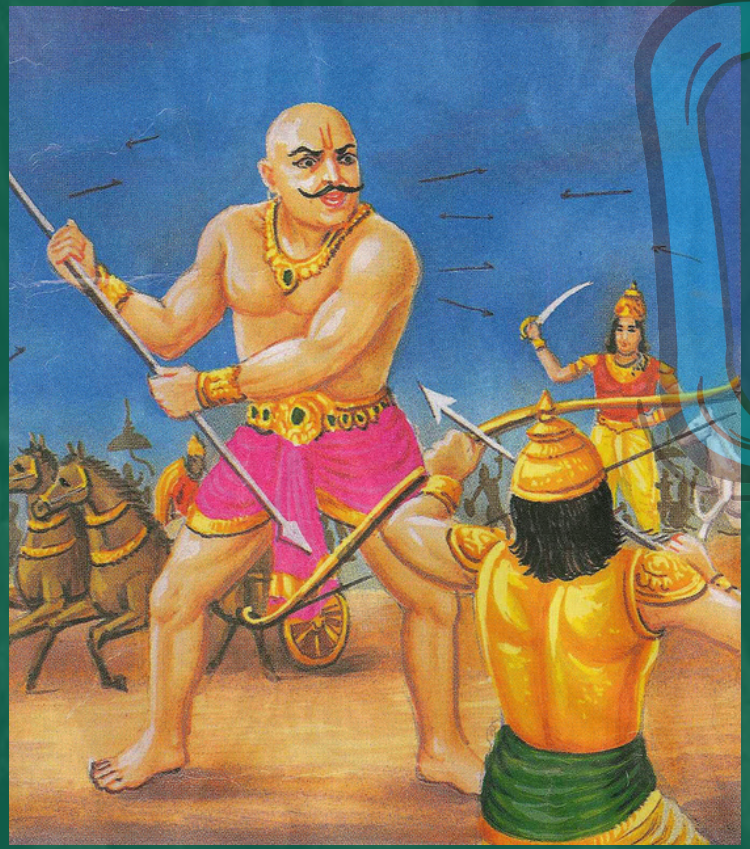
यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन से उद्धृत कहानी का है।

पांडव गहन वन में चले गये थे। थक कर वे सो गये। केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे।

एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष-गंध ने विचलित कर दिया और उसने अपनी बहन हिडिम्बा को उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा। हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गई और एक सुंदर स्त्री के वेष में उसने भीम को विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



इस बीच राक्षस वहां आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया। शोर सुनकर अन्य पांडव जाग गये। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया। वह कुंती से बोली।

"हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बान्धव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया है.... चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. हिडिम्बा कौन थी ?

Q. भीम किन शर्तों पर हिडिम्बा से शादी के लिए तैयार हुआ ?

Q. पांडवों को वन क्यूँ भेजा ?

अंततः युद्धिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जायेंगे।

यह दंपति दिनभर सभी लोकों की सैर करते। समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पश्चात् मां और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गये किंतु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी जरूरत होगी वह उपस्थित हो जायेगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता था जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



चार वर्णों से परे : अधीनता और संघर्ष

- ब्राह्मण कुछ लोगों को वर्ण व्यवस्था वाली सामाजिक प्रणाली के बाहर मानते थे। साथ ही उन्होंने समाज के कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर सामाजिक वैषम्य को और अधिक प्रखर बनाया।
- ब्राह्मणों का यह मानना था कि कुछ कर्म खासतौर से वे जो अनुष्ठानों के संपादन से जुड़े थे, पुनीत और पवित्र थे, अतः अपने को पवित्र मानने वाले लोग अस्पृश्यों से भोजन नहीं स्वीकार करते थे।
- पवित्रता के इस पहलू के ठीक विपरीत कुछ कार्य ऐसे थे जिन्हें खासतौर से 'दूषित' माना जाता था। शवों की अंत्येष्टि और मृत पशुओं को छूने वालों को चाण्डाल कहा जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

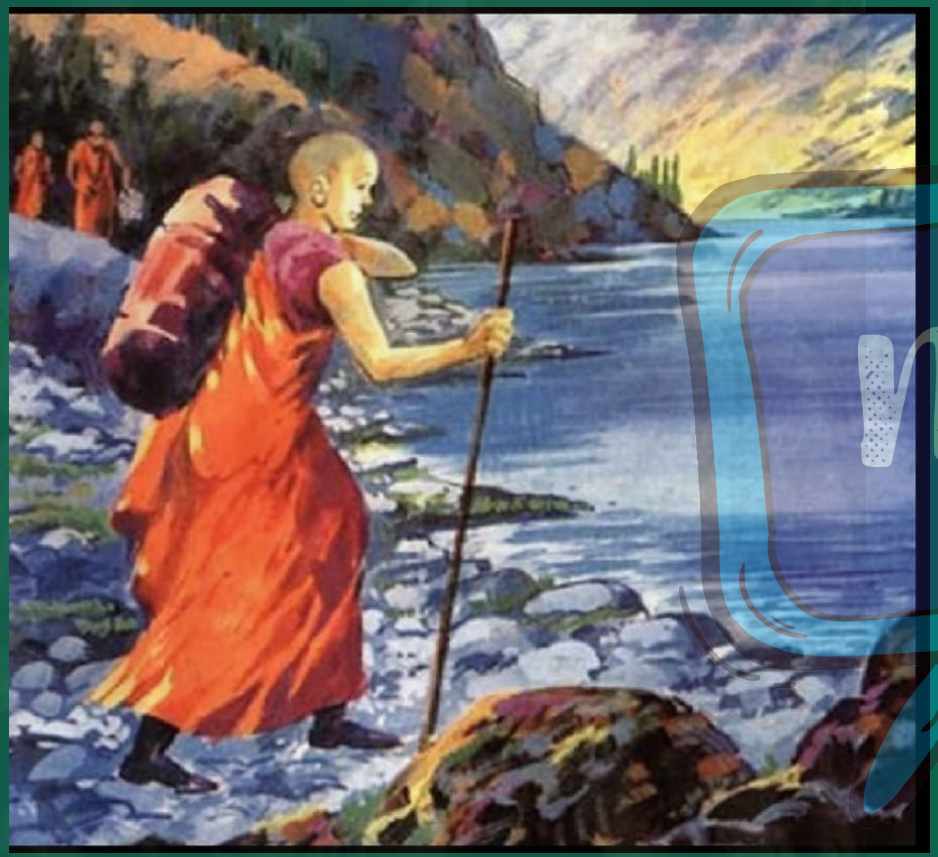
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. मनुस्मृति में चाण्डालों के लिए निर्धारित कर्तव्यों का समालोचनात्मक परीक्षण करें?

- इन्हें वर्ण व्यवस्था वाले समाज में सबसे निम्न कोटि में रखा जाता था। वे लोग जो स्वयं को सामाजिक क्रम में सबसे ऊपर मानते थे, इन चाण्डालों का स्पर्श, यहां तक कि उन्हें देखना भी, अपवित्रकारी मानते थे।
- मनुस्मृति में चाण्डालों के 'कर्तव्यों' की सूची मिलती है। उन्हें गांव के बाहर रहना होता था। वे फेंके हुए बर्तनों का इस्तेमाल करते थे, मरे हुए लोगों के वस्त्र तथा लोहे के आभूषण पहनते थे। रात्रि में वे गांव और नगरों में चल फिर नहीं सकते थे। संबंधियों से विहीन मृतकों की उनहें अंत्येष्टि करनी पड़ती थी तथा वधिक के रूप में भी कार्य करना होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

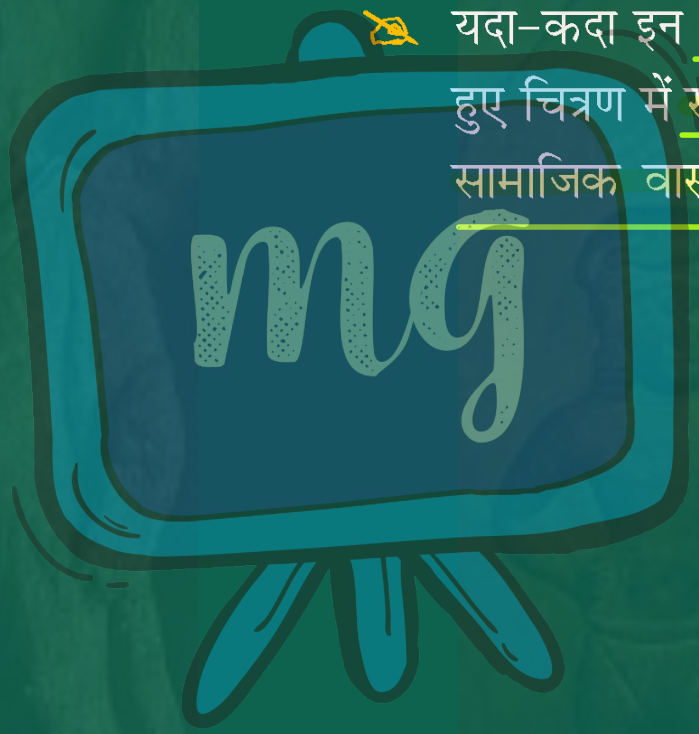
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- चीन से आये बौद्ध-भिक्षु फा-शियन (500 ई.) का कहना है कि अस्पृश्यों को सड़क पर चलते हुए करताल बजाकर अपने होने की सूचना देनी पड़ती थी जिससे अन्य जन उन्हें देखने के दोष से बच जायें।
- एक अन्य चीनी यात्री श्वैन-त्सांग (लगभग 700 ई.) का कहना है कि वधिक और सफाई करने वालों को नगर से बाहर रहना पड़ता था।
- अब्राह्मणीय ग्रंथों में चित्रित चाण्डालों के जीवन का विश्लेषण करके इतिहासकारों ने यह जानने का प्रयास किया है कि क्या चाण्डालों ने शास्त्रों में निर्धारित अपने हीन-जीवन को स्वीकार कर लिया था?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- यदा-कदा इन ग्रंथों के चित्रण और ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुए चित्रण में समानता है और कभी कभी एक भिन्न सामाजिक वास्तविकता का संकेत मिलता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. वर्ण से आप क्या समझते हैं?

Q. पितृवंशिक व्यवस्था की विशेषता बताईये?

Q. प्राचीन भारत की वर्ण व्यवस्था पर प्रकाश डालें?

Q. महाभारत की भाषा सामग्री की चर्चा करें?

Q. व्याख्या किजिए की आप कैसे सिद्ध करेंगें की महाभारत ग्रंथ गतिशील था?